विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

चुनावों में जातियों की भूमिका

जैसे-जैसे चुनाव नज़दीक आते जा रहे हैं, देश का माहौल बदलता जा रहा है। बहुत बार सामान्य बोलचाल में चुनावों को लोकतंत्र का उत्सव या त्योहार कह दिया जाता है। चुनाव नज़दीक आने पर बढ़ी हुई हलचलें यह बात भी याद दिला देती हैं। चुनाव के अर्थ सबके लिए अलग-अलग होते हैं। जो राजनीति में आकण्ठ डूबे हैं उनके लिए चुनाव का मतलब एक अग्नि परीक्षा है और उनका एकमात्र लक्ष्य होता है इस अग्नि परीक्षा में खरा उतरना। जिस पार्टी में मैं हूं, या जिसमें जीतने की ज़्यादा संभावनाएं हैं, उस पार्टी से मुझे अपने मनचाहे निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ने के लिए टिकट मिल जाए, टिकट मिल जाए तो मैं जीत जाऊं और जीत जाऊं तो सरकार में मेरी हिस्सेदारी पक्की हो जाए, न केवल पक्की हो जाए, मनचाहा मंत्रालय मुझे मिल जाए - यह सपना हर सक्रिय राजनीति कर्मी देखता है। जो लोग विभिन्न राजनीतिक दलों के कर्ता धर्ता हैं उनका लक्ष्य होता है कि 'जैसे भी हो' उनके दल की सरकार बन जाए। यहां 'जैसे भी हो' को विशेष रूप से पढ़ा और समझा जाए। इधर 'जैसे भी हो' वाली बात अधिक मुखर और प्रखर होती जा रही है। कहा होगा कभी मोहनदास कर्मचंद गांधी नाम के व्यक्ति ने कि अपवित्र साधनों से पवित्र साध्य प्राप्त नहीं किए जा सकते, लेकिन अब गांधी को बहुत पीछे छोड़ा जा चुका है। जो लोग आज सत्ता में हैं उनके लिए गांधी आदर्श का नहीं उपहास का विषय है, इसलिए यह बहुत स्वाभाविक है कि वे गांधी की बात पर अमल भी नहीं करते हैं। इसे किसी एक राजनीतिक दल के संदर्भ में ही नहीं पढ़ा जाए। गांधी को विस्मृत करने के प्रयास के मामले में सारे दल कमोबेश एक ही थैली ही थैली के चट्टे बट्टे हैं।

जहां राजनीति कर्मियों के लिए चुनाव का अर्थ अपनी जीत सुनिश्चित करना है वहीं समाज के अन्य तबकों के लोग भी उसमें अपने हित के अवसर तलाश करने लग गए हैं। चुनाव आते ही मीडिया की पूछ बहुत बढ़ जाती है। सरकारें बड़े-बड़े विज्ञापन देकर मीडिया को अपने अनुकूल करने के प्रयासों में जुट जाती हैं तो मीडिया भी इस अवसर का भरपूर दोहन करने में कोई संकोच नहीं करता है। इधर सभी ने इस बात को देखा होगा कि सुदूर दक्षिण के राज्य भी उत्तर भारत के समाचार पत्रों को अपने विज्ञापनों से पाट रहे हैं। उनके विज्ञापन यहां के लोग भले ही न देखें, या वे उन्हें अपने लिए प्रासंगिक न पाएं, विज्ञापन देने वाले मीडिया को उपकृत करके उसकी सद्भावना तो अर्जित कर ही लेते हैं। इधर के बरसों में मीडिया प्रबंधन भी बहुत व्यवस्थित और संगठित रूप से होने लगा है। अनेक एजेंसीज़ यह काम करने लगी हैं। चुनाव उनके लिए भी एक बड़ा अवसर होता है और वे दोनों हाथों से इस अवसर को लपक लेने के लिए लालायित रहती हैं। उन्हें उपकृत करने वाली सरकारें भी कोई कृपणता नहीं बरतती हैं। आखिर अपनी गांठ से क्या जाता है?

आम लोग भी बहती गंगा में हाथ धोने में पीछे नहीं रहते हैं। बिना समुचित सरकारी अनुमति के भवन निर्माण, अवैध निर्माण, अतिक्रमण जैसे अनेक काम चुनाव के समय काफी तेज़ हो जाते हैं। हरेक यह जानता समझता है कि इस समय मतदाता को नाराज़ करने का खतरा कोई नहीं उठाएगा। सरकारी कर्मचारी भी अपनी लंबित मांगों को लेकर अधिक सक्रिय हो उठते हैं। वे इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि अगर अभी उनकी मांगें पूरी नहीं हुई तो फिर अगले चुनाव तक इंतज़ार करना पड़ेगा। एक बार जीत जाने के बाद सरकार के पास उनकी बात सुनने के लिए कोई समय नहीं होगा। कर्मचारी भी अब इतने समझदार हो गए हैं कि अपनी मांगों को बढ़ा चढ़ाकर पेश करते हैं, यह जानते हुए कि सरकार भी कुछ मोलभाव करेगी, और अगर उन्होंने तोप मांगी है तो तमंचा तो दे ही देगी। असल में उनकी ज़रूरत भी तमंचे की ही होती है।

हम जाति सम्मेलन करके अपनी जाति के लोगों के लिए टिकट मांगते रहेंगे और चाहेंगे कि चुनावों में और सरकारी कामकाज में जाति का हस्तक्षेप न हो! अगर हमें जातिवाद को ख़त्म करना है तो इस दोहरेपन को समझना और इससे किनारा करना होगा। तभी स्थितियां सुधरेंगी।

इधर चुनाव नज़दीक आने पर एक नई प्रवृत्ति देखने को मिलने लगी है, जो रोचक होने के साथ-साथ चिंताजनक भी है। चुनाव नज़दीक आते देख विभिन्न जातियों के संगठन भी सक्रिय हो उठते हैं और वे राजनीतिक दलों से यह मांग करने लगते हैं कि उनकी जाति के लोगों को अधिक से अधिक टिकट दिये जाएं। जातियों के नेतागण इस मामले में बड़े उदार होते हैं कि वे अपनी मांग किसी दल विशेष से न करके सभी दलों से करते हैं। हर जाति की शिकायत यही होती है कि उसे आनुपातिक रूप से कम राजनीतिक प्रतिनिधित्व मिलता रहा है और उस जाति वालों की मांग होती है कि इस असंतुलन को कम किया जाए। विभिन्न राजनीतिक दलों के मझले या बड़े (बहुत बड़े तो नहीं) नेता भी इस तरह के सम्मेलनों में शामिल होते हैं और अपनी आदत और अभ्यास के अनुरूप इन जातियों को आश्वासनों के झुनझुने थमा कर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। अब यह कोई छिपी हुई बात नहीं रह गई है कि हर राजनीतिक दल विभिन्न जातियों को ध्यान में रखकर ही टिकट वितरण करता है। न केवल टिकट वितरण करता है चुनाव जीतने की रणनीतियां बनाते हुए भी जातीय समीकरणों को ख़ास महत्व दिया जाता है। लेकिन जो बात मुझे चकित करती है और क्षुब्ध भी, वह यह कि विभिन्न जातियों के लोग कैसे एक साथ सभी दलों से टिकट की मांग कर सकते हैं? ध्यान देने की बात यह है कि जब कोई समाज किसी दल से टिकट की मांग करता है तो अप्रत्यक्ष रूप से वह यह भी संकेत देता है कि हमारा पूरा समर्थन आपको मिलेगा। सोचिये कोई वाम और दक्षिण, साम्प्रदायिक और धर्म निरपेक्ष, समाजवादी और पूंजीवादी दोनों को एक साथ कैसे समर्थन दे सकता है? जो दल राजनीति में एक दूसरे के खून के प्यासे हैं, हम उन दोनों को एक साथ कैसे अपने सहयोग का आश्वासन दे सकते हैं? हमारा अपना कोई सोच है भी या नहीं? हम किसी को सही और किसी को ग़लत मानते हैं या नहीं? क्या विचारधारा का कोई अर्थ नहीं है हमारे लिए? यह तो शुद्ध नंगई है कि आप विचारधारा को ताक पर रखकर केवल जाति के आधार पर समर्थन मांगे और दें।

एक और बात। जब किसी जाति विशेष के लोग चुनाव के नज़दीक आने पर अपना सम्मेलन या महासम्मेलन करते हैं और उसमें बड्डी भीड़ जुटाते हैं तो असल में यह राजनीतिक दलों के समक्ष उनका शक्ति प्रदर्शन होता है। वे राजनीतिक दलों को बताते हैं कि देखो हमारे पास इतना जन बल है, हमारी उपेक्षा करना बड़ा महंगा पड़ने वाला है तुम्हें। राजनीतिक दल भी उनकी बात सुनकर उनके कुछ प्रतिनिधियों को टिकट देकर उपकृत कर देते हैं। लेकिन टिकट मिल जाने से आम तौर पर उस जाति का क्या भला होता है? जो लोग इस तरह के सम्मेलनों में शामिल होते हैं, अपना समय व साधन नियोजित करते हैं उन्हें क्या हासिल होता है? केवल इस बात का सुख कि हमारी जाति के एक व्यक्ति को टिकट मिल गया है, या वह एमएलए या एमपी बन गया है, या वह मंत्री बन गया है! समाज का आम सदस्य क्या इस थोथे गर्व के लिए इतनी ज़हमत उठाता है? उसकी मांग पर जिसे टिकट दिया जाता है क्या वह जीत जाने के बाद उस अकिंचन व्यक्ति को पहचानता भी है? क्या वह ज़रूरत पड़ने पर कभी उसके काम भी आता है? काम आना तो दूर की बात है क्या उससे मुलाकात भी मुमकिन होती है? चुनाव जीतते ही वह किसी और दुनिया का सदस्य बन जाता है। उसके जैसे सुर्खाब के पर निकल आते हैं।

सोचने की बात यह है कि क्या इस तरह के जातिगत सम्मेलन सामान्य जन का दोहन और शोषण नहीं है? इनसे लाभ, अगर होता है, तो चंद रसूखदार लोगों का होता है। वे ही इन भोले-भाले लोगों को अपनी पालकी उठाने के लिए और अपनी जय जयकार करने के लिए इस्तेमाल करते हैं, और करके भूल जाते हैं। मैं तो याद नहीं कर पाता हूं कि किसी ने भी चुनाव जीतने के बाद अपनी जाति के लिए कुछ ख़ास किया हो। और सच बात तो यह है कि उसे किसी जाति विशेष के लिए करना भी नहीं चाहिए।

बहुत दुखद बात यह है कि हम चुनावों और देश के वर्तमान लोकतंत्र में जिस जातिवाद को गरियाते नहीं थकते हैं, व्यवहार में उसी जातिवाद को पालते-पोसते भी हैं। यह हमारा दोहरा और दोगला चरित्र बहुत सारी विसंगतियों और विडम्बनाओं के मूल में है। हम अपने गिरेबान में झांककर नहीं देखते हैं। हमारी सारी उम्मीद औरों से ही होती है। हम जाति सम्मेलन करके अपनी जाति के लोगों के लिए टिकट मांगते रहेंगे और चाहेंगे कि चुनावों में और सरकारी कामकाज में जाति का हस्तक्षेप न हो! अगर हमें जातिवाद को ख़त्म करना है तो इस दोहरेपन को समझना और इससे किनारा करना होगा। तभी स्थितियां सुधरेंगी।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

फ्रांस की व्यापक हिंसा का अध्ययन होना चाहिए

डॉ. रामावतार शर्मा

सन 2018 से आज तक फ्रांस में सिलसिलेवार पीली जैकेट आंदोलन जारी है जिसमें सामान्य नागरिक बड़ी संख्या में शामिल हैं। ये साप्ताहिक प्रदर्शन सामाजिक एवम् आर्थिक न्याय, सरकारी पारदर्शिता, अप्रवासन (इमिग्रेशन) पर अंकुश, नस्लवाद का विरोध, जन सुविधाओं का विस्तार आदि 42 मांगों को लेकर होते रहते हैं। भारत की तरह फ्रांस सरकार भी नियमित पेंशन में कटौती कर रही है इसको लेकर भी वहां ज़बर्दस्त आंदोलन होते रहते हैं। अभी हाल ही में एक पुलिस सार्जेंट द्वारा एक 17 वर्ष के लड़के को बिना किसी विशेष कारण गोली मारने के बाद फ्रांस के कुछ शहर यकायक दहकने लगे। यह घटना एक लंबे जन असंतोष की परिणति है हालांकि भारत में सोशल मीडिया इसे एक अलग ही दृष्टिकोण से पेश कर रहा है। सरकार और समाज भी इस दुष्प्रचार को अनदेखा कर रहे हैं हालांकि फ्रांस में जो आज हो रहा है वह व्हाट्सएप और टेलीग्राम जैसे माध्यमों पर फैलाई गई दुर्भावनाओं का ही परिणाम है।

फ्रांस ने अल्जीरिया को अपना उपनिवेश बना कर अमानवीय कृत्य किए थे। आगे चलकर जैसे भारतीय उपमहाद्वीप से लोग ब्रिटेन जा बसे वैसे ही अल्जीरिया और कई अन्य फ्रांसीसी उपनिवेशों से जाकर लोग फ्रांस में बस गए। प्रारंभ में ये विदेशों से आए लोग फ्रांस के रईसों के नौकर-चाकर थे परंतु समय के साथ रईसी समाप्त होती गई, शिक्षा का प्रसार हुआ, प्रतिस्पर्धा बढ़ी तो संघर्ष का जन्म हुआ। आज जो कुछ फ्रांस में हो रहा है वह इन सामाजिक समीकरणों का परिणाम है। 17 वर्षीय नाहेल को दो पुलिस सार्जेंटों ने रोका तो वह रुका नहीं। ऐसे में एक ऑफिसर ने उसके सिर पर गोली चलाकर उसे मार दिया। उस अधिकारी के अनुसार लड़के का कार चलाना गैर कानूनी था और वह अन्य लोगों के लिए खतरा बन सकता था इसलिए उस पर गोली चलाई गई। इस अधिकारी के इस तर्क को स्वीकार नहीं किया गया और गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

चूंकि यूरोपियन फ्रेंच लोग और बाहर से आकर बसे फ्रांसीसी लोगों के जीवन स्तर में बड़ा अंतर है तो नाहेल की हत्या ने एक चिंगारी का काम किया। गैर यूरोपियन फ्रेंच लोग लूटपाट करने लगे। ज्यादातर उत्पाती और लुटेरे 15 से 20 साल की उम्र के थे। लंदन के ईवनिंग स्टार समाचार पत्र के अनुसार फ्रेंच पुलिस का एक वर्ग अतिवादी लोगों से भरा हुआ है जो मानता है कि ;हम जाहिल कीड़ों के साथ युद्ध कर रहे हैं।; मृत नाहेल की दादी ने शांति की अपील की है और कहा है कि ;हिंसा से हम उन लोगों को नुकसान पहुंचा रहे है जो हमारे अपने जैसे ही हैं।; लंदन के दूसरे पत्र गार्डियन के अनुसार ;भू राजनैतिक (जियोपोलिटिकल), सामाजिक और नस्लवाद आदि इस समस्या के जन्मदाता हैं।; फ्रेंच मीडिया ने काले लिबास में हथियारबंद लुटेरों को बार बार दिखाया जो ज्यादातर 17-18 वर्ष के थे।

यूरोपियन समाचार पत्रों के अनुसार पुलिस काले और उत्तरी अमेरिकन लोगों पर ज्यादा ही सख्ती बरतती है। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग के अनुसार बच्चे पर गोली चलाने की घटना ;वह क्षण है जिसमें देश को आत्मावलोकन करना चाहिए कि यहां पर कानून लागू करने वालों में नस्लवाद और नस्ल आधारित भेदभाव कितना गहरा हो चला है।; ऐसा नहीं है कि फ्रांस की पूरी पुलिस नस्लवादी है या फिर उत्तरी अमेरिकन और काले लोगों में अपराधियों की कमी है परंतु पुलिस और फ्रांस की आम जनता का एक भाग धुर दक्षिणपंथी है जो गैर फ्रांसीसी मूल के लोगों से नफरत करता है और गोरों की सर्वोच्चता को ही स्वीकार करता है। इनकी नेता मेरी ली पेन यदि अगला राष्ट्रपति का चुनाव जीत गई तो एमानुएल मैक्रॉन की मध्यम मार्ग नीति को नष्ट कर देगी। मैक्रॉन संविधान के अनुसार तीसरा चुनाव नहीं लड़ सकते परंतु वे नहीं चाहते कि ली पेन उनकी परंपरा को नष्ट कर एक नस्लवादी फ्रांस को जन्म दें।

प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक एंड्रयू हसी के अनुसार ;यह समय फ्रांस की सरकार और वहां के लोगों के लिए अवलोकन करने का है कि जहां आज फ्रांस खड़ा है वहां से वह 21वीं सदी में अपने उद्देश्य प्राप्त कर सकता है या नहीं।; फ्रांस में उत्पाती लड़कों ने जन संपत्ति को बड़ा नुकसान पहुंचाया है। वे लोग ये भूल गए कि यह संपति उनकी अपनी है और इसे दुबारा बनाने में वर्षों लगेंगे जिसकी वजह से उनका आज का कठिन जीवन और मुश्किल हो जायेगा। समय आ गया है जब फ्रांस ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया को सोचना होगा कि लोग अपना जीवन चोर, लूटेरे और हत्यारों के हाथों सुपुर्द नहीं करें क्योंकि ये लोग धर्म, नस्ल, रंग, जाति और स्थानीयता आदि की ओट लेकर हर तरफ तबाही मचाते रहेंगे। ऐसे लोग किसी भी आधार पर किसी भी तरह के समर्थन के अधिकारी नहीं हैं। नाहेल की हत्या अमानवीय और अक्षम्य है परंतु उसके जवाब में सामान्य लोगों के व्यापारिक प्रतिष्ठानों की लूट, तोड़फोड़, जन संपदा का विनाश और व्यापक हिंसा किसी भी मापदंड पर उचित नहीं है। व्हाट्सएप और टेलीग्राम जैसी एप्स के जरिए विश्व भर में जो द्वेष और दुश्मनी का वातावरण बनाया जा रहा है उसके विरोध में पुर असर आवाजें उठनी चाहिएं वरना फ्रांस की घटनाएं इंगित कर रहीं हैं कि आगे चलकर इस तरह जलने धधकने वाला देश अकेला फ्रांस ही नहीं रह जाएगा। धार्मिक शिक्षा की ओट में जो जहर का पेड़ बोया जाता है उस पर प्रहार का समय आ गया है। धार्मिक शिक्षा के नाम पर जो राजनीति और नफरत पर आधारित जहर बच्चों को पिलाया जा रहा है वह अब आग का रूप ले चुका है।

मशहूर शायर कैफ भोपाली के शब्दों में कहा जाए तो--

आग का क्या है, पल दो पल में लगती है,
बुझते-बुझते एक जमाना लगता है।।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

बनास कलाकार समूह टोंक की ओर से रंग मल्हार का आयोजन

टोंक, (निसं)। बनास कलाकार समूह टोंक की ओर से रविवार को अंतर्राष्ट्रीय कलाकार उत्सव 14वें रंग मल्हार का आयोजन डाक बंगला टोंक में किया। इस आयोजन के प्रेरक कलागुरु विद्यासागर उपाध्याय है जिन्होंने जयपुर से इस आयोजन का आगाज किया था। इस आयोजन के अंतर्गत सभी कलाकार देश में अच्छी वर्षा और सुख संपन्नता के लिए प्रार्थना करते हैं और अपनी कूँची के रंग बिखेरते हैं।

आयोजन में रंग करने हेतु प्रतिवर्ष सभी कलाकार अपने-अपने क्षेत्र के प्रमुख स्थान पर एकत्रित होकर चयनित थीम ऑब्जेक्ट पर या उसकी रेप्लिका बनाकर उस पर पेंट किया जाता है। इस वर्ष यह आयोजन राष्ट्रीय से अंतरराष्ट्रीय आयोजन के रूप अपनी पहचान बना रहा है। इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई देशों के कलाकार इस आयोजन का हिस्सा बने। इस वर्ष की थीम ऑब्जेक्ट चाय केतली है, इतिहास हो चुकी चाय की केतली एक बार फिर घरों के स्टोर से निकलकर रंग मल्हार के रंगों से सरोबार होकर फिर से आमजन के बीच आने को तैयार है। आज इस आयोजन के दौरान बहुत से प्रतिभागी जिन्हें केतली नहीं मिली उन्होंने केतली की रेप्लिका बनाकर उसे नए रूप में आमजन के बीच लाने की तैयारी कर रहे हैं। बनास कलाकार समूह के सभी कलाकारों ने सक्रियता के साथ भाग लिया।

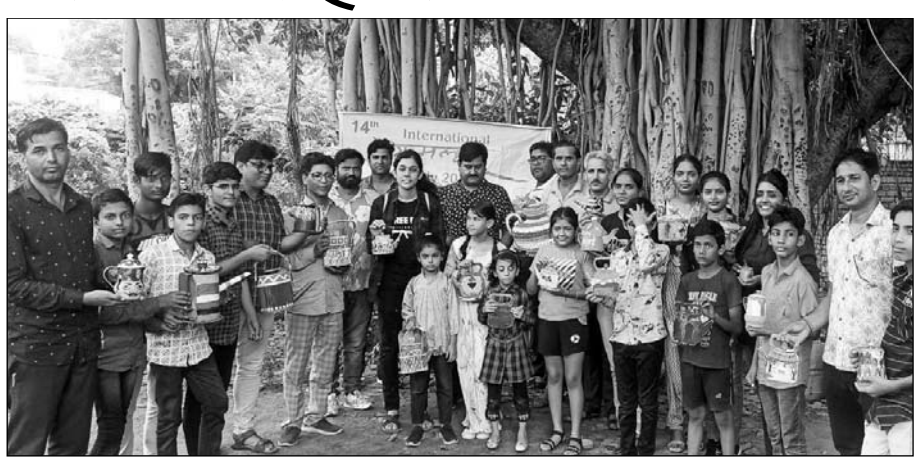

बनास कलाकार समूह की ओर से रंग मल्हार का आयोजन डाक बंगला टोंक में किया।

अध्यक्ष जसवंत सिंह नरुका ने बताया कि इस आयोजन में कुल 40 से अधिक कलाकारों ने भाग लिया जिनमें पूनम सालोदिया, हुनर सालोदिया, युवराज साहू, मेहुल गुर्जर,नरेंद्र साहू, प्रतुल गुर्जर, डॉ. हनुमान सिंह खरेड़ा, लक्षित साहू, रचित साहू, मनीषा तमोली, कुसुमलता तमोली, राजवंती तमोली, माहिरा खान, जमील उन्नीसा, शेख यावर हबीब, अरवीश, वैष्णवी सोनी, निशात मुबीन, शाईस्ता खान, उमेश साहू, मोनू बंजारा, शैलेन्द्र सिंह भाटी, जसवंतसिंह नरुका, पुरुषोत्तम सोनी, नवोदय विद्यालय छान से ताराचंद शर्मा, अपेक्षा चौधरी, निहारिका चौधरी, अंजली चौधरी, प्रिया, परी गुर्जर, अंजली मीना, अभिषेक बैरवा, अभिषेक गुर्जर, अर्पित चौधरी, सुमित तलवार, अंकेश जाट, आदित्य चौबदार, कृष्णा कंवर, गिरधर सिंह राजावत, प्रियंका शर्मा, अनंत मिश्रा, अजय मिश्रा, अन्नपूर्णा भंडारी मूंदडा और चित्रकार महेश गुर्जर सम्मलित थे। बनास कलाकार समूह के सचिव उमेश साहू ने बताया कि कार्यक्रम के अंत मे मुख्य अतिथि द्वारा सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मानित किया और सभी ने अनुभव साझा किये।

■ **अंतर्राष्ट्रीय कलाकार उत्सव 14वें रंग मल्हार आयोजित हुआ**

पुष्कर के गऊ घाट पर कावड़ियों की भीड़ उत्पात मचा रही है, पुलिस तैनात

पुष्कर, (निसं.)। गऊ घाट पर कावड़ियों की भीड़ व कावड़िये पानी में उत्पात मचा रहे हैं। इसकी सूचना मिलते ही ग्रामीण पुलिस उप अधीक्षक मनीष बडगुजर एवं पुष्कर के एसडीएम निखिल कुमार ने घाटों पर पुलिस का जाप्ता तैनात कर दिया है।

पुष्कर के जागरूक नागरिक हेमंत रायता ने बताया कि रविवार होने की वजह से हजारों की तादात में कावड़िया भोले पर जल अभिषेक करने हेतु जल लेने आए हुए हैं। इस दौरान खासकर युवा लोग होते हैं उन्हें पुष्कर के जल की जानकारी नहीं होती है ऐसे में कोई हादसा नहीं घटे इसको लेकर कावड़ियों को अवगत कराया जाता है। लेकिन कावड़िया युवा होने के कारण कहना नहीं मानते हैं गहरा पानी होने के कारण डूबने का डर बना हुआ है इसलिए पुलिस जाता लगाना जरूरी है। यह पोस्ट उसे करके एसडीएम निखिल कुमार और ग्रामीण पुलिस उपअधीक्षक को डालते ही उन्होंने पुष्कर के घाटों पर स्पेशल जाता तैनात कर दिया है। हालांकि सिविल डिफेंस टीम भी कार्य कर रही है। एसडीआरएफ की टीम भी बहुत जरूरी है क्योंकि आगामी दिनों में कावड़ियों की तादाद और बढ़ेगी। ग्रामीण पुलिस उप अधीक्षक मनीष बडगूजर ने घाटों पर जाप्ता तैनात करके उनकी जानकरी दी। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए कोई घटना नहीं घटे इसके पहले ही पुलिस तैनात कर दिए पूरी रात कावड़िया जल लेने के लिए पुष्कर आ रहे हैं। प्रशासन को अब एसडीआरएफ की टीम भी जरूर तैनात करनी चाहिए।

पुष्कर के घाटों पर तैनात पुलिस जाप्ता किया गया।

■ **कावड़िया युवा होने के कारण कहना नहीं मानते, गहरा पानी होने से डूबने का डर बना है**

लकड़ी से भरा ट्रक कंटेनर जब्त किया

माण्डलगढ़, (निस) बीगोद थाना पुलिस ने गश्त के दौरान आरा मशीनों से कटिंग की गई अवैध लकड़ियों से भरा कंटेनर ट्रक को पकड़ा है। चालक के पास लकड़ी परिवहन का परमिट नहीं मिलने पर संदिग्ध ट्रक को थाने में खड़ा कराया है और कार्रवाई के लिए वन विभाग को सूचना दी। बीगोद थाने के सहायक उप निरीक्षक जय सिंह के अनुसार खटवाड़ा-बीगोद मार्ग पर एक संदिग्ध कंटेनर आ रहा था। ट्रक को रुकवा कर तलाशी ली गई। ट्रक की बन्द बॉडी में आरामशीन से कटिंग की गई विभिन्न किस्म की लकड़ियां भरी हुई थी। ट्रक चालक के पार लकड़ी परिवहन परमिट नहीं मिला। जब्त कंटेनर ट्रक की जांच एवं कार्रवाई के लिए माण्डलगढ़ वन विभाग के रेंजर दशरथ सिंह को सूचना की गई जो रविवार सांय तक वन विभाग से कोई अधिकारी थाने नहीं पहुंचा।

मजदूर का सिलिकोसिस कार्ड बनाने के नाम पर 1.20 लाख की ठगी

जोधपुर, (कासं)। पत्थर की खदान पर काम करने वाले एक श्रमिक का सिलिकोसिस कार्ड बनाने के नाम पर ठगी हो गई। श्रमिक से एक महिला ने 1 लाख 20 हजार रूपये हड़प लिए। यह ठगी इसलिए भी ज्यादा दुखद है, क्योंकि श्रमिक खुद पाई-पाई जोड़ कर और लोगों से उधर लेकर यह राशि लाया था। पुलिस ने एक महिला समेत अन्य के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

मथानिया थाना क्षेत्र के नेवरा गांव के रहने वाले राजू सिंह जो कि खुद पत्थर की माइंस में श्रमिक है, ने रिपोर्ट दी कि जोधपुर निवासी सुमित्रा से उनका कुछ दिन पहले संपर्क हुआ था और उसने सिलिकोसिस कार्ड बनाने का वादा किया। श्रमिक भी उसके झांसे में आ गया और उसके कहे अनुसार पाई पाई जोड़ कर और अपने परिचित लोगों से उधार रुपए लेकर 1 लाख 20 हजार की राशि जुटाकर उसे दे दी। महिला काफी दिनों तक तो कार्ड बनाने का झांसा देती रही। लेकिन इसके बाद पीड़ित से किनारा कर लिया। इतनी बड़ी राशि देने के बाद भी पीड़ित का सिलिकोसिस कार्ड नहीं बनने पर उसे ठगी का एहसास हुआ और मथानिया थाने में मामला दर्ज करवाया।

पुलिस मामले की जांच कर रही है। गौरतलब है सिलिकोसिस कार्ड बनने के बाद उस व्यक्ति को राजस्थान सरकार अधिकारिक रूप से इस बीमारी से पीड़ित मान लेती है। इसके बाद पीड़ित को जो भी सुविधाएं दी जाती है वहां मिलने लगती है। एक लाख रुपए की सहायता राशि राजस्थान सरकार तुरंत देती है। इसीलिए पीड़ित ठग महिला के झांसे में आ गया। महिला ने प्रलोभन दिया कि कार्ड बनते ही सरकार की ओर से उसे एक लाख मिल जाएंगे। लेकिन ना तो कार्ड बना और ना ही पीड़ित की ओर से दिए गए रूपये वापस मिले।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 17 जुलाई, 2023

प्रथम सावन मास (शुद्ध), कृष्ण पक्ष, अमावस्या, सोमवार, विक्रम संवत 2080, पुनर्वसु नक्षत्र मंगलवार प्रात: 5:11 तक, व्याघात योग प्रात: 8:57 तक, चतुष्पद करण दिन 11:05 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 10:32 से कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मेष, शुक्र-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

कुमार योग रात्रि 12:02 से मंगलवार प्रात: 5:11 तक है। आज देवपितृकार्य अमावस्या, हरियाली और सोमवती अमावस्या, संक्राति पूण्यकाल पूर्वान्ह में है। आज सावन वन सोमवार, सरस माधुरी जयन्ती है। आज से मनस पूजन आरम्भ होगी। आज करकट पूजा (केरल में) है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:24 तक, शुभ 9:10 से 10:51 तक, चर 2:14 से 3:55 तक, लाभ-अमृत 3:55 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:30 तक। सूर्योदय 5:47, सूर्यास्त 6:18

मेष
पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिव समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

धनु
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

मीन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।